



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-

.....विवेक पाण्डेय.....

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

**हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति**

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - विवेक पाण्डेय

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या:

“जातिवाद की राजनीति : राष्ट्र के लिए एक गंभीर
चुनौती”



आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या: "जातिवाद की राजनीति : राष्ट्र के लिए एक गंभीर चुनौती"

लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि राजनीति समाज को जोड़ने का कार्य करे, न कि उसे विभाजित करने का। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में जाति एक सामाजिक वास्तविकता रही है, किंतु जब यही जाति राजनीतिक लाभ का प्रमुख साधन बन जाती है, तब यह राष्ट्रीय एकता और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए गंभीर चुनौती बन सकती है।

पिछले कुछ वर्षों में देश में जाति आधारित राजनीति को विशेष महत्व मिला है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, दोनों पर समय-समय पर जातीय समीकरणों के आधार पर राजनीति करने के आरोप लगते रहे हैं। पहले विपक्षी दलों ने जाति आधारित जनगणना की मांग को प्रमुखता से उठाया, बाद में केंद्र सरकार ने भी जाति आधारित गणना कराने का निर्णय लिया। इस विषय पर देश में व्यापक बहस हुई और आज भी इसके संभावित प्रभावों पर विभिन्न मत सामने आते हैं।

यह प्रश्न विचारणीय है कि जाति आधारित गणना से सबसे अधिक लाभ किसे होगा। एक मत यह है कि इससे राजनीतिक दलों को चुनावी रणनीति बनाने में सुविधा मिलेगी। विभिन्न क्षेत्रों में जातीय आबादी के आधार पर उम्मीदवारों के चयन और चुनावी समीकरणों को अधिक महत्व दिया जा सकता है। इससे आशंका व्यक्त की जाती है कि योग्यता, विकास और जनहित जैसे मुद्दे पीछे छूट सकते हैं तथा जातीय पहचान राजनीति का प्रमुख आधार बन सकती है।

यदि समाज में हर निर्णय जाति के आधार पर होने लगे, तो सामाजिक समरसता प्रभावित हो सकती है। इससे विभिन्न वर्गों के बीच अविश्वास और वैमनस्य बढ़ने का खतरा उत्पन्न हो सकता है। किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी एकता होती है, और यदि समाज जातीय आधार पर विभाजित होने लगे तो इसका दीर्घकालीन प्रभाव राष्ट्रीय विकास पर भी पड़ सकता है।

इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि राजनीति का केंद्र जाति नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सुशासन, भ्रष्टाचार-मुक्त व्यवस्था और समग्र विकास जैसे विषय हों। लोकतंत्र तभी सशक्त होगा जब नागरिकों को उनकी योग्यता, क्षमता और समान अधिकारों के आधार पर अवसर प्राप्त होंगे तथा समाज में सभी वर्गों के बीच भाईचारा और समानता की भावना बनी रहेगी।

- विवेक पाण्डेय



लेखक परिचय

नाम – विवेक पाण्डेय

पता : गाँव ककवाई, पोस्ट : अंडनी

थाना व तहसील : करहल

जनपद मैनपुरी

उत्तर प्रदेश

पिन : 205264

मोबाइल : 9719558758, 9411441214





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ..... **विवेक पाण्डेय**जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

